श्री कृष्ण अक्षरातीत है या श्री प्राणनाथ जी

आज के ज्ञानी जन और आज के आचार्य मंडल को यह सोचना चाहिए कि सत्य क्या है और असत्य क्या है क्योंकि सत्य क्या है और धर्म क्या है बिना इसकी पहचान किए बिना हम किसके साथ कैसा आचरण करेंगे आज चिन्ता का विषय यह है कि बड़े-बड़े ज्ञानी जन और आचार्य जन जिन के ऊपर सामाजिक धर्म वाले विश्वास रखते हैं और उन्हीं के बताए सिखाए रास्ते पर चलते है। अगर वही ज्ञानी जन और आचार्य जन स्वयं सत को छुपाए और असत के नाम को रोशन करे तो उस धर्म समाज का क्या होगा इसकी सारी जवाबदारी आचार्य और ज्ञानी जन की होती है।

अगर वो स्वयं मान सम्मान और स्वार्थ में लीन है तो वो धर्म समाज को कैसे (सत्) एक परमात्मा की पहचान कराएगें। आज जिस कृष्ण जी को अक्षरातीत कहा जा सकता है कुलजम स्वरूप वाणी के भी विरुद्ध है कि श्री कृष्ण जी अक्षरातीत है आवो अब हम (कुलजम स्वरूप वाणी) के द्वारा देखे कि क्या श्री कृष्ण जी अक्षरातीत है या नहीं।

निजनाम सोई जाहेर हुआ जाकी सब दुनी राह देखत।

अब प्रश्न यह खड़ा होता है कि सारी दुनिया वाले किसकी राह देख रहे थे। राह तो उसकी देखी जाती है जो आने वाला होता है। न कि जो आ गया है। श्री कृष्ण जी तो द्वापर में आ चुके हैं। तो दुनिया उनकी राह क्यों देखेगी। राह तो सब श्री प्राणनाथ जी अक्षरातीत की देख रहे थे। अब श्री प्राणनाथ जी आ गये हैं। वही स्वयं अपने वाणी और अपने ज्ञान की पहचान करवा रहे हैं। इससे साफ स्पष्ट हो जाता है कि श्री कृष्ण जी न तो कलयुग में आए और न ही वे अक्षरातीत है।

अब बात इस मुद्दे पर पहुंचते है कि कृष्ण ही अक्षरातीत है और कृष्ण ही कुलजम वाणी को लाने वाले हैं तो कुलजम वाणी में कृष्ण नाम का विरोधाभास क्यों क्या कोई अपने नाम पर दाग लगाएगा

आवो देखो ते माटे कहयूं एम नहीं तो रामत जे की धी श्री कृष्ण।
ए नामनुं तारतम में केहेवाए साथ संभारी जुओ जीव माहें।।

प्र० गु० ३३/६

स्वयं श्री प्राणनाथ जी अक्षरातीत अपने मुखार बिन्द से कह रहे हैं कि कृष्ण के नाम का तारतम मैं कैसे कह दूं हे सुन्दरसाथ जी जरा अपने चित के अन्दर इस बात को लो और सोचों कि कृष्ण के नाम को मैं कैसे अक्षरातीत कहू कृष्ण के पीछे पड़ने की कोई जरूरत नहीं है। अपने धनी श्री प्राणनाथ जी की पेहेचान करो। इससे सिद्ध हो गया कि श्री कृष्ण अक्षरातीत नहीं है।

पोते प्रगट पधराया छे आड़ा देओ छो बृज ने रास।
इंद्रावती अन्तर का कीधूं तेम देओ मूने तेनों जबाब।।

खटरूति किताब के इस चौपाई को देखो हबसे के जेल में इन्द्रावती जी श्री राज जी महाराज से जवाब

Nijanand App

पूछ रहीं हैं कि आप खुद सब विध वतन सहित यहां आए हो बृज रास और कृष्ण यै सब नाम का परदा क्यों डाल रहे हो आप तो साक्षात अक्षरातीत हो आप मेरे प्राणनाथ हो कृष्ण से हमने क्या लेना है।

अगर आप कृष्ण हो तो ये बताओं कि आप की राधिका कहां है। क्यों कहते हो कि श्री श्यामा जी वर सत्य है राज जी महाराज अब क्या जवाब दें।

निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत :- कहने का तात्पर्य यह है कि मैं कृष्ण नहीं हूं मैंने कृष्ण नाम का तन धारण किया था याद दिलाने के लिए वो बृज की लीला को ताकि रुहें समझ जाएं कि बृज की लीला हमने ही की थी। इसलिए कृष्ण शब्द कहना पड़ा तारतम के इसी चरण का जबाव राज जी महाराज स्वयं दे रहे हैं ताकि कोई सुन्दरसाथ कृष्ण को ही अक्षरातीत न समझ बैठे देखें तारतम का अन्तिम चरण आयो आनन्द अखड घर को श्री अक्षरातीत भरतार। क्यों नहीं कह दिया कि आयो आनन्द अखंड घर को श्री कृष्ण इसलिए नहीं कहा कि श्री कृष्ण अक्षरातीत नहीं हैं श्री प्राणनाथ जी ही अक्षरातीत हैं देखो चौ० नीचे की -

रोशनी पार के पार की दई साहेब नाम धराए।
भई दुनियां साफ मुसाफ से मुझसे कजा कराए।।
प्र० ६१ चौ० २४ कि०

इस ज्ञान को लाने वाले स्वयं साहेब है न कि कृष्ण है। अगर श्री कृष्ण रोशनी को लाते तो साहेब की जगह कृष्ण होना चाहिए

दुनी को किससे साफ होना है जीव किस ज्ञान से भव से पार करेगा भागवत से नहीं गीता से नहीं साफ मुसाफ से होना है। मुसाफ यही कुलजम वाणी जो अन्तिम कुरान है जिसको लाने वाले साहेब हैं । श्री प्राणनाथ जी है। श्री राज जी महाराज है और यही अक्षरातीत हैं न कि श्री कृष्ण अक्षरातीत है।

नाम तत्व कहयु श्री कृष्ण जो खेले अखंड लीला रास।

श्री कृष्ण जी योगमाया के आगे नहीं हैं। वहां पर सबलिक के अन्दर आज भी रास अखंड है।

सुन्दरसाथ आपका चरणरज

नरेन्द्र निजानन्दी

बड़ोदरा आश्रम

गुजरात

Nijanand App